Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10251973

हिंदी कथा साहित्य पर आधारित फिल्में: एक संवाद

डॉ धर्मेंद्र सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार उत्तराखंड

सारांशिका : साहित्य मनुष्य की अत्यन्त सुन्दर सशक्त अनुभूति है। जो समाज के क्रियाकलापों को प्रतिबिम्बित करती है। समाज में घटने वाली परिस्थितियाँ ही साहित्य का आधार हैं। सिनेमा और साहित्य का नैतिक कल्याणपरकए सुखद एवं वातावरणीय शुद्धता ही मानव को जागरूक बनाकर सही दिशा निर्देशन दे सकता है। बदली हुई राजनीतिक परिस्थितियों पर यह अवश्यंभावी भी है। यह महत्त्वपूर्ण संयोजन गति सिने. साहित्य के कन्धों पर है जो समाज को दिशा और दशा प्रदान करता है। आज सभी देशों की कलाए संस्कृति एवं साहित्य एक. दूसरे देशों के आम नागरिकों तक पहुँच चुका है। साहित्य और सिनेमा को दिये जाने वाले विश्वस्तरीय पुरस्कार इसके प्रमाण हैं। इसमें उद्भूत किए हुए जीवन शक्ति मूल्य बहुधा सामाजिक.राजनीतिक चेतना का प्रेरक एवं संवाहक होते है। समाज में होने वाले परिवर्तनों को साहित्य के माध्यम से ही स्पष्ट रूप से जाना और समझा जा सकता है। इस परिवर्तन को साहित्यकार अपनी अन्तर्दृष्टि से देखता हैए महसूस करता है साथ ही उसकी लेखनी इस सत्य का उद्घाटन करती है। इस प्रकार साहित्यकार दोहरा कर्म करता हैए समाज को बदलने का और उस बदलाव को समाज के सामने लाने का कार्य करता है।

सांस्कृति और राजनीति के बेलगाम होते मूल्य को सही मार्ग निर्देशन करना तथा उसके पल्लवन के प्रति हमदर्दी. पूर्ण रवैया अपनाना साहित्य और सिने जगत का ज्वलंत मुद्दा है। समाज के सुधार और समन्वय की विराट चेष्टा का सम्पूरित आगाज सिनेमा के माध्यम से अत्यधिक प्रभावी रहा है। बौद्धिक विग्रहों का प्रभाव और टूटते भावात्मक रिश्ते की वजह से आज मनुष्य यान्त्रिक होता जा रहा है। मानव जीवन की यह बैसाखी आने वाली पीढ़ियों के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकती है। बौद्धिकता और भावात्मकता के विविध रूपों का अनुसंधान करने वाले साहित्य और सिनेमा ने समाज के सभी वर्गों में आपसी भाईचारा की भावना अभिवृद्धि को प्रस्तुत किया है। बिगड़ते हुए राजनैतिक स्वरूप के समक्ष समाज सापेक्ष परिवर्तनोंए अवमानना के नित नये आयामों को आकार देता सिने जगतए वैश्विक धरातल के विविध स्वरूपों को सहजता से परोसने में अग्रसर रहा है। जरूरत है साहित्यिक और सिनेमिक स्वरूप को सहगामी अनुसंधान करने की। यह अनुसंधान समाजपरक मूवमेंटए आर्ट कल्चर एवं मॉरेलिटी के लिए आदर्श सिद्ध होगा। सांस्कृतिक दीवारों के विभाजकता में छेद करके पार जाने की मुहिम के रूप में उपयोगी होगा।

भाषाए भाव और संस्कृति के उपक्षेत्रीय उपक्रमों के सम्बर्द्धन हेतु साहित्यिक.सिनेमिक प्रतिबद्धता के जुड़ाव को मूल्यवर्धित किया जा सकता है। सिनेमा के बदलते चेहरे और साहित्य के नेतृत्वहीन फैलाव को सही दिशाए दशाए दृष्टि और दर्शन देने की जरूरत है। उच्च भावपरकए संवेदनशील सिनेमा एवं साहित्य का नवनिर्माण वर्तमान समय के लिए आवश्यक है।जनवरी 1935 के श्विशाल भारतश पत्रिका में बनारसी दास चतुर्वेदी नें लिखा था कि. श्हम उन कठमुल्लाओं के सख्त विरोधी हैं जो सिनेमा को त्याज्य मान बैठे हैंए क्योंकि कठमुल्लापन स्वयं एक ऐसा व्यवसाय है जो सिनेमा व्यवसाय से कम भयंकर नहींश।,1द्धसिनेमा और साहित्य का नैतिक कल्याणपरकए सुखद एवं वातावरणीय शुद्धता ही मानव को जागरूक बनाकर सही दिशा निर्देशन दे सकता है। यह महत्त्वपूर्ण संयोजन गति सिने. साहित्य के कन्धों पर है। जिससे समाज को नई दिशा मिल सके। सिनेमा और साहित्य को किसी खास देशकाल और परिस्थितियों में बाँधकर नहीं देखा जा सकता है। यह विविध रूपों में देखा और जाना जाता है। आज सभी देशों की कलाए संस्कृति एवं साहित्य एक.दूसरे देशों के आम नागरिकों तक पहुँच चुका है। जिसका परिवर्तन समाज और राजनीति में

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10251973

देखा जा सकता है। वर्तमान की गतिविधियों में साहित्य और सिनेमा को दिये जाने वाले विश्वस्तरीय पुरस्कार इसके प्रमाण हैं।

I प्रस्तावना: हिंदी साहित्य एक ऐसा धरोहर है जो समृद्धि से भरा हुआ है और न केवल बहुत सालों से पढ़ा जा रहा है बल्कि इसके विकास में कार्य भी हो रहा है। जिससे समाज को नई दिशा प्राप्त हो सके। साहित्य समाज रूपी शरीर की आत्मा है । साहित्य अजर.अमर है। साहित्य का विकसित रूप ही आज सिनेमा के नाम से जाना जाता है । साहित्य की प्रत्येक विधा को आत्मसात करने में सक्षम और समाज पर सीधे व शीघ्र प्रभाव उत्पन्न करने के गुणों के परिणामस्वरूप ही सिनेमा की साहित्य अध्ययन में उपादेयता स्वतः स्पष्ट हो जाती है।

21 वीं सदी के इस दौर में आज समस्त विश्व पर सबसे ज्यादा प्रभाव जिस माध्यम का है वह सिनेमा ही है। हमारे रीति.रिवाजए खान.पानए रहन.सहन से लेकर चिंतन तक सिनेमा की पहुँच विलक्षण प्रतिमान लेकर उपस्थित हुई है। समूची मानव सभ्यता का यथार्थ जिस माध्यम से हमारे सामने उपस्थित हैए उसमें सिनेमा की भूमिका अग्रणी है। यह सिनेमा ही है जिसने विश्व.संस्कृति की अवधारणा को नये आयाम दिए हैं। जनसंचार के सषक्त माध्यम के रूप में या कहें कि मानवीय संवाद बनाए रखने के लिए सिनेमा आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। इसके आधार पर बनी फिल्में भी दर्शकों के दिलों को छु जाती हैं। हिंदी कथा साहित्य पर आधारित कुछ ऐसी फिल्मों के बारे में जो 2000 के दशक में हिंदी भाषा में बनी थीं। इन्ही फिल्मों ने न केवल बॉलीवुड को नई दिशा दीए बल्कि भारतीय सिनेमा को विश्व मंच पर पहचान भी दिलाई।

II हिन्दी सिनेमा का प्रारंभिक काल ;सन्1896.1940 तक:

भारत में सिनेमा का प्रदर्शन करने की शुरूआत करने का श्रेय श्लुमीयर ब्रदर्सश नामक दो फ्रांसीसी बन्धुओं को जाता है। 7 जुलाई 1896 ईण में बम्बई के वाटसन थिएटर में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया। उस समय इस थिएटर के टिकट का मूल्य चार आने से लेकर अधिकतम दो रुपये तक था जो तत्कालीन समय का बहुत मँहगा टिकट था। लुमीयर बन्धुओं ने जब भारतीयों को फिल्म दिखाया तो लोग बेजान तस्वीरों को चलते. फिरते देखकर दंग रह गये। तत्कालीन समय के संचार के जितने माध्यम थे इनमें इन फिल्मों का आश्चर्यजनक चमत्कारपूर्ण और अलौकिक था।

सन् 1904 ईण में मणि सेठना ने भारत का पहला श्सिनेमाघरश बनाया जिसमें सर्वप्रथम श्द लाइफ आफ क्राइस्टश फिल्म सिनेमाघर में प्रदर्शित की गयी। यही वह फिल्म थी जिसने भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहेब फाल्के को भारत में सिनेमा की नींव रखने को प्रेरित किया। 1909 ईण में श्कोरोनेशन थिएटरश नें श्पुण्डलीकश फिल्म बनाई जिसका निर्देशन श्दादा साहेब तोर्नेश ने किया। श्राजा हरिश्चन्द्रश दादा साहेब फाल्के द्वारा सन् 1913 में बनाई गयी पहली भारतीय अवाक फीचर फिल्म थीए इसकी कुल लम्बाई श्चार रीलों की थी। इसके अलावा भस्मासुर मोहिनीए सत्यवान.सावित्रीए लंकादहन आदि फिल्में बनाई गयीं। हिन्दुस्तान फिल्म कंपनी ने कृष्ण जन्मए कालिया मर्दनए बालि.सुग्रीवए नल.दमयन्तीए परशुराम आदि फिल्में बनाईं।

III हिन्दी सिनेमा का स्वर्ण युग ;1940.1960:

भारतीय सिनेमा में सन् 1940 से 1960 ईण तक का समय स्वर्णकाल का युग माना जाता है। इस समय संघर्षशील हिन्दी सिनेमा का जनता ने हर्षयुक्त स्वागत किया। इन प्रशंसीय फिल्मों में श्गुरुदत्तश की फिल्म. प्यासा ;1957द्धए कागज के फूल ;1959द्धए राजकपूर की फिल्म. आवारा ;1951द्ध श्री 420 ;1955द्ध प्रमुख हैं। इन फिल्मों की सामाजिक कहानी सर्वहारा वर्ग और मूलतः नगर से सम्बन्धित था । उदाहरणस्वरूप फिल्म आवारा की कहानी शहर और भयानक स्वप्निल दुनिया से सम्बन्धित था और श्प्यासाश शहर की अस्वाभाविकता पर केन्द्रित फिल्म थी। इस समय कुछ प्रसिद्ध वीरतापूर्ण फिल्में भी बनाई गयीं जैसे. महबूब

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10251973

खान की मदर इंडिया ;1957द्धए जिसने अपना नाम. श्अकेडमी अवार्ड फार बेस्ट फारेन लैंग्वेजश के लिए नामांकित कराया। केण आसिफ का श्मुगल.ए.आजम ;1960द्धए विमल राय का मधुमती ;1958द्ध जिसकी पटकथा रित्वीक घातकश ने लिखा थाए पुर्नजन्म पर आधारित फिल्म थी। कमल अमरोही और विजय भट्ट भी तत्कालीन समय के प्रसिद्ध ऐसे फिल्म निर्माता थे जिनके फिल्मों की काफी सराहना की गयी। स्वर्णकाल के प्रसिद्ध अभिनेताओं में धर्मदेव आनन्द ;देवानन्दद्धण दिलीप कुमारए राज कपूर और गुरुदत्त तथा अभिनेत्रियों में नरगिसए बैजन्ती मालाए मीना कुमारीए मधुबालाए वहीदा रहमान और माला सिन्हा आदि प्रमुख हैं।

जब व्यावसायिक हिन्दी सिनेमा अपने ऊफान पर था उस समय 1950 ईण के आसपास एक नये क्षेत्र पर आधारित सिनेमा का आन्दोलन भी चल रहा थाए यह था बंगाली सिनेमा का आन्दोलन द्य बंगाली सिनेमा भी हिन्दी सिनेमा के समान प्रसिद्धि की ओर अग्रसर था। हिन्दी सिनेमा में चेतन आनन्द का नीचा नगर ;1946द्धए विमल राय का दो एकड़ जमीन ;1953द्ध सराहनीय फिल्में थीं। कुछ अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के हिन्दी फिल्म निर्माताओं ने हिन्दी सिनेमा के आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाईए जिनमें मनी कौलए कुमार साहनीए केतन मेहताए गोविन्द निहलानीए श्याम बेनेगलए और विजय मेहता प्रमुख हैं। सामाजिक यथार्थ को आधार बनाकर बनाई गयी फिल्म श्नीचा नगर ने पहली कॉन फिल्म महोत्सव में शानदार पुरस्कार प्राप्त किया। 1950.60 के दशक में हिन्दी फिल्में अक्सर प्रतियोगिता में नामित होती थीं उनमें से कुछ ने श्कॉन फिल्म महोत्सव में पुरस्कार अर्जित किए। गुरुदत्त को जब वे फिल्मों में अच्छा काम कर रहे थे उनके कार्यों को अनदेखा किया गया किन्तु बाद में उनके किये गये योगदान के लिए 1980 के दशक मेंए मान्यता दी गयी। वर्तमान समय में उसी प्रकार गुरुदत्त को महान श्एशियाई फिल्म निर्माता के रूप में याद किया जाता है जिस प्रकार बंगाली फिल्म निर्माता सत्यजीत रे को याद किया जाता है। सन् 2002 ईण में श्वाईट और साउण्ड के द्वारा निर्माता और निर्देशकों पर किये गये सर्वेक्षण में उन्हें 73वाँ स्थान मिला। गुरुदत्त के कुछ फिल्मों को सर्वकालिक महान योगदान के लिए श्टाइम.पत्रिका नें श्100 बेस्ट फिल्मों की लिस्ट में शामिल किया है जिसमें प्यासा ;1957द्ध भी शामिल है इस युग की अन्य कई फिल्में भी श्साईट एण्ड साउण्ड पोल में ऊँचे रैंक पर थी जैसे. राजकपूर का आवारा ;1951द्ध विजय भट्ट का श्बैजू बावराश ;1952द्ध महबूब खान का श्मदर इण्डिया ;1956द्ध और केण आसिफ मुगल.ए.आजम ;1960द्ध द्य

III आधुनिक सिनेमा

सन् 1960 से 1970 के दशक की फिल्मेंए रोमांस एवं एक्शन पर आधारित थीं। इस समय के स्टार अभिनेताओं में राजेश खन्नाए धर्मेन्द्रए संजीव कुमार और शशि कपूर तथा अभिनेत्रियों में शर्मीला टैगोरए मुमताज और आशा पारिख को प्रमुख से जाना जाता है। तत्कालीन समय में रोमांटिक फिल्मों के अतिरिक्त रोमांचए खुरदुरापनए गैंगस्टरए डकैती से भरी फिल्में भी बनाई गयीं। सुपरस्टार अमिताभ बच्चन को श्एंग्री यंग मैनश के रोल में काफी सराहना मिली। कुछ हिन्दी फिल्म निर्माता 1970 के दशक में यथार्थ जीवन पर भी फिल्म बनाते रहे इनमें प्रमुख रूप से श्याम बेनेगल का नाम आता है। इस समय के फिल्म निर्माताओं में मनी कौलए कुमार साहनीए केतन मेहताए गोविन्द निहलानी और विनय मेहता प्रमुख थे।

व्यावसायिक फिल्मों की उन्नति 1970 के दशक से होनी शुरू हुई । 1975 में शोले फिल्म रिलीज हुई जिसमें कि अमिताभ बच्चन की एक अगुआ अभिनेता के रूप में प्रस्तुत किए गए। इसी प्रकार भक्ति फिल्मों में श्जय सन्तोषी माँश फिल्म बनी तथा यश चोपड़ा द्वारा निर्देशित फिल्म श्दीवारश सन् 1975 में रिलीज हुई जिसके लेखक सलीम जावेद थे। इस फिल्म में हाजिम मस्तान नामक स्मगलर के वास्तविक जीवन का किरदार निभाया अमिताभ बच्चन नें। जिसमें एक पुलिसमैन ने अपने भाई ;जो एक गैंग लीडर थाद्ध के विरूद्ध भूमिका निभाई थी। शतरंज के खिलाड़ी ;1977द्ध . मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास श्शतरंज के खिलाड़ीश से प्रेरित। सत्यजीत रे द्वारा निर्देशितए संजीव कुमार और सईद जाफ़री के साथ फिल्म बनाई गई जो राजनैतिक स्थितियों का वर्णन करती है।

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10251973

1980 में मीरा नायर की फिल्म श्सलाम बाम्बेश ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त की जो 1988 में श्कॉन फिल्म महोत्सवश में श्अकादमी अवार्ड फार बेस्ट फारेन लैंग्वेज फिल्म के लिए नामित हुई। तमस ;1987द्ध . भीष्म साहनी के उपन्यास श्तमसश पर आधारित। गोविंद निहालानी द्वारा निर्देशितए ओम पुरीए दीपा साहीए और अमरीश पुरी के साथ अभिनय किया।

1990 के दशक में फिल्म निर्माताओं ने परिवारिक फिल्मों के साथ.साथ सामाजिक विसंगतियों पर प्रकाश डाला । इस प्रकार की कुछ सफल फिल्मों में श्मैने प्यार कियाश ;1989द्धए श्हम आपके हैं कौनश ;1994द्धए बंदित क्वीन ठंदकपज फनममद ;1994द्धए शेखर कपूर द्वारा निर्मित और निर्देशित ष्बंदित क्वीनष एक और उदाहरण है जो हिंदी साहित्य के उपन्यास ष्क्रोम चालकीया टो बेददी वालाष के आधार पर बनी थी। यह फिल्म फूलन देवी के जीवन की कहानी पर आधारित थीए जो महिला बवंडर और बांधुआ जीवन से गुजर गई थीं और एक बंदियन बन गईं। फिल्म में उसके संघर्षए उत्पीडनए और आत्मनिर्भरता की कहानी दर्शाई गई थी। इस प्रकार संयुक्त कार्य समान रूप से चलते रहे जिसमें परिवारिक फिल्म श्दिलवाले दुल्हनिया ले जायेगें ;1995द्ध आदि हैंए जिसने अपनी फिल्मों में नये चेहरों को नयी पीढ़ी का रोल माडलश बनाकर प्रस्तुत कियाए जैसे कि. आमिर खानए सलमान खान और शाहरूख खान इस काल की अभिनेत्रियों में श्रीदेवीए माधुरी दीक्षितए जुही चावला आदि कलाकारों का अभिनय सराहनीय था।

साहित्य पर आधारित 2000 के दशक में फिल्में प्रस्तुत हुई हैं। वे फिल्में सिनेमा के माध्यम से न केवल विशेषतः हिंदी साहित्य प्रेमियों को आकर्षित करतीं हैं। श्स्वानंद किरकिरे ;जो गीतकार और संवाद लेखक हैंद्ध का विचार है कि. श्किसी खास फिल्म की ध्वनि कैसी होनी चाहिए इसका पूरा ख्याल रखना चाहिए। इस दिशा में शुरुआत रहमान नें कियाए रहमान में भाषा और शब्दों को भी ध्वनि के तौर पर इस्तेमाल कर लेने की कुशलता हैए दूसरी ओर स्नेहा खानविलकर एक अलग साउंड की तलाश में हैं। हमारी परम्पराओं में से ध्वनियाँ खोजी जा रही हैं जैसे. श्ओए लकीए लकी ओएश का संगीतश।;2द्ध फिल्में सामाजिक संदेशों को समझाने में भी मदद करतीं हैं। इन फिल्मों ने बॉलीवुड को एक नई दिशा दी है और भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में सहायक सिद्ध हुई हैं।

1ण दिलच्छला ;क्पस बीजं भंपद्ध . 2001रू

फरहान अख्तर द्वारा निर्मित और निर्देशित ष्दिलच्छलाष एक आधुनिक भारतीय सिनेमा का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस फिल्म के नायकों के संबंधों में उतार.चढ़ावए भविष्य की योजनाएं और दोस्ती के महत्व को दर्शाया गया। फिल्म के नायक अमर ;आमिर खानद्धए अकश ;अक्षय खन्नाद्ध और सिद्धार्थ ;सैफ अली खानद्ध अपने जीवन के तनाव भरे फैसलों के सामने खड़े होते हैं और इस परिवर्तन के माध्यम से वे अपने जीवन में नई दिशा प्राप्त करते हैं।

2ण मॉनसून वेडिंग ;डवदेववद ॅमककपदहद्ध . 2001रू

मीरा नायर द्वारा निर्मित और निर्देशित ष्मॉनसून वेडिंगष एक विशेष फिल्म थी जो हिंदी सिनेमा के बाहरी दर्शकों को भी आकर्षित किया। इस फिल्म मेंए एक पंजाबी परिवार की विवाह समारोह की तैयारी और उसमें उत्पन्न घरेलू और रिश्तेदारी दुर्गमता को दिखाया गया। इसमें कुछ उपन्यासों के तत्व भी दिखाए गए थे जिससे फिल्म का महसूस होने वाला कार्यक्रम भी दर्शकों को आकर्षित किया।

3ण्ष्देवदासष ;2002द्ध . सरत चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास ष्देवदासष पर आधारित। संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशितए शाहरुख़ ख़ानए ऐश्वर्या रायए और माधुरी दीक्षित के साथ।

4ण्बागबान ;ठंहीइंदद्ध . 2003रू

रवि चोपड़ा द्वारा निर्मित ष्बागबानष एक अनूठी कहानी थी जिसमें वृद्धावस्था की प्रतिबद्धता और परिवार के महत्व को दिखाया गया था। फिल्म के नायक अमिताभ बच्चन और हेमा मालिनी थेए जो एक सुखी और सफल जीवन जी रहे थे लेकिन उनकी जिंदगी में एक बड़ा परिवर्तन होता है जब उनके बच्चे उन्हें अस्पताल

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10251973

में छोड़ देते हैं और उन्हें सिर्फ अस्पताल की कमरों में ही रहना पड़ता है। इस फिल्म में परिवार के तनावए आत्मनिर्भरताए और समर्थन की एहमियत दिखाई गई थी।

5ण दीवार ;क्ममूंतद्ध . 2004रू

गोविंद निहलानी द्वारा निर्मित ष्दीवारष हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यास ष्गोदानष के आधार पर बनी थी। इसमें राजकुमार राव और अक्षय खन्ना ने मुख्य भूमिका निभाई थी और उनकी जोड़ी को दर्शकों ने खूब पसंद किया था। यह फिल्म ग्रामीण भारत की समस्याओं को दर्शाती थी और रोजगारए अन्यायएसामाजिक विभेदए और न्याय के मुद्दे को उजागर करती थी। फिल्म के नायक राजकुमार राव एक संवेदनशील किसान थे जो कठिनाईयों से जूझते हुए अपने परिवार के लिए न्याय खोजते थे। इस फिल्म ने उपन्यास की कहानी को वास्तविकता में प्रस्तुत किया और अपनी मांग बाँधती रही कि भारतीय समाज में समाजिक और आर्थिक समानता को प्राथमिकता दी जाए।

6ण मांगल पांडे ;डंदहंस च्ंदकमलरू जीमत्पेपदहद्ध 2005रू

ष्मांगल पांडेरू द राइजिंगष हिंदी साहित्य के इतिहास में एक अनूठी कहानी को दर्शाने वाली फिल्म थी। इस फिल्म के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले गोली कांड में शामिल हुए मांगल पांडे ;आमिर खानद्ध की कहानी दर्शाई गई थी। फिल्म ने महाशय मांगल पांडे के जीवन के वास्तविक घटनाओं पर आधारित थीए जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणादायक कहानी थी।

10ण ष्परिनीताष ;2005द्ध . सरत चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास ष्परिणीताष पर आधारित। प्रदीप सरकार द्वारा निर्देशितए सैफ अली ख़ानए विद्या बालनए और संजय दत्त के साथ।

7ण गोलमाल ;ळवसउंसद्ध . 2006रू

ष्गोलमालष एक हिंदी कॉमेडी फिल्म थी जिसमें उपन्यास ष्एक चुतकुला एकांतष के तत्व दिखाए गए थे। इस फिल्म में अजय देवगनए अरशद वारसीए शरमन जोशीए शरत सक्सेनाए और पारेश रावल ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं। यह फिल्म भारतीय सिनेमा में कॉमेडी का नया रूप दिखाने वाली थी और इसकी मजेदार कहानी और चरित्र ने दर्शकों को मनोरंजन का स्वाद दिलाया।

8ण ओमकारा ;व्ठांतंद्ध . 2006रू

विशाल भारद्वाज ने निर्मित और निर्देशित ष्ओमकाराष शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक ष्ओथेलोष पर आधारित थी। इस फिल्म में ओठेलो की कहानी को उत्तर प्रदेश के गांवों में स्थानांतरित किया गया था जिसमें सैफ अली खानए अजय देवगनए करीना कपूरए विवेक ओबेरॉयए और कोंकणा सेन ने महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई थीं। फिल्म ने उत्तर प्रदेश के रजनीतिक और गुंडा राज में होने वाली शक्ति और इंसानी कमजोरियों की दुर्दशा को दिखाया था।

9ण ष्३ इडियट्सष ;2009द्ध . चेतन भगत के उपन्यास ष्फाइव पॉइंट समवनष से प्रेरित। राजकुमार हिरानी द्वारा निर्देशितए आमिर ख़ानए करीना कपूर ख़ानए और आरण माधवन के साथ।

10ण द ट्वेल्थ वारिएटीज़ ऑफ़ लव ;जीम ज़ूमसजी टंतपंजपवदे वि स्वअमद्ध . 2012रू

ष्द ट्वेल्थ वारिएटीज़ ऑफ़ लवष हिंदी साहित्य के महान उपन्यास ष्प्यार के बारह विभिन्न रूपष के आधार पर बनी थी। इसमें विश्वास और प्यार के विभिन्न रूपों को दर्शाया गया था जो एक जीवन में होते हैं। फिल्म के नायक रणवीर सिंग और सोनम कपूर थे जो दर्शकों को अपनी अद्भुत अभिनय से मोह रहे थे।

11ण ष्कई पो छे!ष ;2013द्ध . चेतन भगत के उपन्यास ष्द थ्री मिस्टेक्स ऑफ़ माय लाइफष से स्वतंत्र रूप से प्रेरित। अभिषेक कपूर द्वारा निर्देशितए सुशांत सिंह राजपूतए राजकुमार रावए और अमित साध के साथ।

12ण ष्हैदरष ;2014द्ध . शेक्सपियर के नाटक ष्हैमलेटष से प्रेरित और कश्मीर को सेट किया गया। विशाल भारद्वाज द्वारा निर्देशितए शाहिद कपूरए तब्बूए और केण्केण मेनन के साथ।

13ण विक्रम वेद्या ;टपातंउ टमकींद्ध . 2017रू

Career Point International Journal of Research(CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10251973

ष्विक्रम वेद्याष् एक ताज़ा उदाहरण है जो तमिल उपन्यास ष्विक्रमाथितान वेदालाष् पर आधारित है। इस फिल्म में मधवन और रजनीकांत के साथ विजय सेतुपति ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं। फिल्म में एक विभाजित पुलिस अधिकारी विक्रम ;मधवनद्ध के साथ एक दिव्य गुंडे वेद्या ;रजनीकांतद्ध के बीच का खतरनाक संघर्ष दिखाया गया थाए जो उन्हें अपने विचारोंए नैतिकताए और कर्म का समाधान ढूंढने पर मजबूर करता है।

IV निष्कर्ष:

हिंदी कथा साहित्य पर आधारित फिल्में हमारे समाज की सच्ची कहानियों को दर्शाती हैं और उन्हें साधारण मंच पर प्रस्तुत करके सिनेमा के माध्यम से लोगों के दिलों और मस्तिष्क में जगह बना लेती हैं। इन फिल्मों के माध्यम से समाज की विभिन्न मुद्दोंए रिश्तोंए और इंसानियत के मूल्यों को उजागर किया जाता है। यह फिल्में सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं होतींए बल्कि वे दर्शकों को सोचने पर मजबूर करतीं हैं और उन्हें समस्याओं के समाधान ढूंढने के लिए प्रेरित करतीं हैं। इन फिल्मों में कथा साहित्य के विचारोंए पात्रोंए और कहानी के विकास को ध्यान में रखकर उन्हें छवियों में जीवंत करने का काम किया गया है। बहुत से फिल्में ऐसी रहती हैं जो केवल उपन्यास की कहानी को प्रस्तुत करती हैंए बल्कि वे उसके पीछे छिपे भावोंए विचारोंए और संदेशों को भी साझा करतीं हैं। हिंदी कथा साहित्य पर आधारित फिल्में भारतीय सिनेमा में एक अलग पहचान बनाने में सफल रही हैं। ये फिल्में न केवल भारत मेंए बल्कि विदेशों में भी चर्चा का विषय बनीं। इन फिल्मों के जरिए लोग हिंदी साहित्य के समृद्ध विरासत को समझने और उसकी महत्वपूर्णता को महसूस करने का मौका पाते हैं।

फिल्में न केवल आपसी सम्बन्धों और परिवार के महत्व को उजागर करतीं हैंए बल्कि भारतीय समाज में प्रगतिए नैतिकताए और सामाजिक बदलाव के माध्यम से दर्शकों को प्रेरित करतीं हैं। यहां यह भी अनिवार्य है कि फिल्म निर्माताओंए निर्देशकोंए और अभिनेताओं ने कहानी. उपन्यासों को समर्पित रूप से प्रस्तुत किया है और उन्होंने इसे समृद्ध और मानवीय अनुभव में परिवर्तित किया है। इन फिल्मों के द्वारा हिंदी कथा साहित्य के अधिकांश तत्वों को सिनेमा की भाषा में बदला गया हैए जिससे दर्शकों को विविधताए गहराईए और भावनाओं के अनुभव का अवसर मिलता है। हमें यह देखने की आवश्यकता है कि हमारे कथा साहित्य पर आधारित फिल्में हमें बस मनोरंजन नहीं प्रदान करतीं हैंए बल्कि हमें समाज की समस्याओं को समझने और समाधान ढूंढने के लिए प्रेरित करतीं हैं।

साहित्यसंगीतकलाविहीनःएसाक्षात्पशुःपुच्छविषाणहीनरू।
तृणं न खादन्नपि जीवमानःएतद्भागधेयं परमं पशूनाम् ।।

संदर्भ सूची

1. भारतीय सिने सिद्धान्त.अनुपम ओझाए प्रकाशक. राधाकृष्ण प्रकाशनए दिल्लीए प्रण 5
2. भारतीय सिने सिद्धान्त.अनुपम ओझाए प्रकाशक. राधाकृष्ण प्रकाशनए दिल्लीएप्रण31.32
3. साहित्य के विविध आयाम.डॉण्सुधेषएनालंदा प्रकाशनए दिल्ली
4. सिनेमा और समाज विजय अग्रवाल. साहित्य प्रकाशनए दिल्ली
5. हिंदी सिनेमा का इतिहास . मनमोहन चड्ढा
6. भारत में संचार माध्यम. डॉण्संजीव भानावत
7. मीडिया विमर्ष आधुनिक संदर्भ. डॉण् रामलखन मीणा